विज्ञान व्रत

मुझको तो चुप रहना है
तुम कह लो जो कहना है

वक़्त पड़ा तो भूल गया
जो कुछ मुझको कहना है

तुमको सब पहचान गये
जबसे मुझको पहना है

आख़िर कब तक मौन रहूँ
मुझको ही जब कहना है

पानी हूँ तो डरना क्या
बहना है तो बहना है

ढूँढ़ रहा हूँ एक बहाना
उनसे मिलना हो रोज़ाना

मैंने पीना छोड़ दिया है
सन्नाटे में है मैख़ाना

एक - नज़र ही देखूँ तो
छलकेगा ख़ुद ही पैमाना

मारे - मारे क्यों फिरते हो
मुझमें रख लो एक ठिकाना

अब तुम कुछ दिन मुझमें ठहरो
छोड़ो बाहर आना - जाना

जब आँखों से कहता हूँ
सब आँखों से कहता हूँ

तुम ही तुम हो आँखों में
तब आँखों से कहता हूँ

क्यों बतलाऊँ सबको ही
कब आँखों से कहता हूँ

तुमको जो महसूस किया
अब आँखों से कहता हूँ

अद्भुत रूप तुम्हारा है
छब आँखों से कहता हूँ

तुमको जब - जब देखा है
रब आँखों से कहता हूँ

मैं जिसे सुनता रहा
काश वो कुछ बोलता

ढूँढ़ने मुझको चला
हो गया ख़ुद लापता

वक़्त मुझको जब मिला
क्या उसे मैं जी सका

जी रहा हूँ आज भी
वक़्त वो गुज़रा हुआ

उस जगह मैं था नहीं
क्यों उसे दिखता रहा

एन.- 138, सैक्टर-25, नोयडा- 201301

ISSN:2583-8849